प्रकृति का बढ़ता प्रकोप : कारण एवं निवारण

श्री विनय कुमार श्रीवास्तव
उच्च श्रेणी लिपिक

प्रस्तावना

प्रकृति ने हमें धरोहर प्रदान की है जैसे जल, वायु, पृथ्वी, आसमान ये सभी प्रकृति की देन है । प्रकृति ही हमें पालती है । जब मनुष्य प्रकृति के साथ् खिलवाड़ करता है तो उसके भयंकर परिणम भोगने पड़ते हैं । आजकल दिन - प्रतिदिन प्रकृति पर काफी दबाव बढ़ता जा रहा है उसी के कारण प्राकृतिक आपदाओं का जन्म होता है । प्राकृतिक आपदाओं के होने से मानव समाज को जान माल से हाथ धोना पड़ता है जिसमें भूस्खलन, बाढ़ भूकम्प आदि का प्रकोप होता है । प्रस्तुत लेख में इन्हीं विन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए प्राकृतिक आपदाओं के कारण एवं निवारण को विस्तार दिया गया है ।

प्रकृति का बढ़ता प्रकोप -कारण

प्रकृति के बढ़ते प्रकोप के कारण अनेक हैं परन्तु मुख्य रूप से जो कारण अक्सर सामने आते हैं वो निम्न प्रकार हैं

1. पर्वतों के नीचे पानी का जमाव

हिमालय पर्वत पर अधिकतर वर्षा होती है और जिसके कारण प्रमुख निदयों का जल पहाड़ों से निकलने वाली छोटी-छोटी नदियों में जाकर मिलता है व सारा जल एक स्थान पर एकत्रित होता रहता है जिसके कारण पानी का रिसाव काफी होता है व भूमि काफी कमजोर पड़ जाती है व वहां भूस्खलन हो जाता है ।

अभी हाल ही में मालपा गाँव में भूस्खलन हुआ था वहां करीब 166 व्यक्ति मर गये थे जिसमें 60 व्यक्ति वो थे जो कैलाश मानसरोवर की यात्रा को जा रहे थे । ये घटनाक्रम 18 अगस्त की रात्री 2-30 बजे हुई थी उसके बाद कुछ ही दिनों बाद यही भूस्खलन की घटना रूद्रप्रयाग में घटी । इसके बाद भूस्खलन की घटना नैनीताल में घटी कारण यही था वहां वर्षा काफीहुई थी वर्षा का पानी पहाड़ो के नीचे जमा हो गया था व भूमि में चटटानों के खिसकने के कारण पूरे पहाड़ों का भूस्खलन हो गया ।

2- वृक्षों का कटान

वर्षा के समय वर्षा का सारा पानी पहले वृक्षों पर गिरता है फिर धरती पर आता परन्तु कुछ लोभी ठेकेदारों व नीति नियंताओं के गलत आदेशों पर वृक्षों का कटान लगातार जारी रहता है तथा ये लोभी व्यक्ति अपने स्वार्थ के कारनण जंगलों को काटकर मैदानों में परिवर्तित करते जा रहे हैं। जिसके कारण वर्षा का सारा पानी भूमि को काटता जा रहा है व भूमि कमजोर पड़ती जा रही है। पर्यावरण को दूषित कर वृक्षों का कटान जारी है वर्षा समय पर न होकर भूमि को नुकसान पहुंचा रही है।

3. पहाड़ों पर सड़कों का निर्माण

हिमालय पर्वत पर 45 हजार किलोमीटर सड़क अभी तक बनायी जा चुकी है विशेषज्ञों के अनुसार 40-80 घन मीटर मिटटी एक किलोमीटर सड़क बनाने में निकलती है। सड़क बनाने वाले ये ठेकेदार उस मिटटी को पहाड़ों के ढलानों में ठकेल देते हैं जिससे पहाड़ों की वनस्पति तो नष्ट होती ही है साथ ही वह मलवा नीचे जाकर एकत्र हो जाता है। जिसके कारण नदियों के पानी का बहाव रूक जाता है व एक बाँध सा बन जाता है जिससे मैदान में रहने वाले लोगों को जान माल का खतरा पैदा हो जाता है। बाढ़ आने का खतरा काफी बढ़ जाता है। बाढ़ों से गाँव जो निचले स्थानों पर होते हैं नष्ट हो जाते हैं व त्राहि त्राहि मच जाती है।

4 . गुरूत्वाकर्षण

गुरूत्वाकर्षण के कारण प्रत्येक वस्तु भूमि पर खिचती है व सन्तुलित रहती है। जब पहाड़ों पर वर्षा होती है तो बिजली कड़कती है व पहाड़ों पर गिर जाती है जिसके कारण चटटान चटक जाती हैं तथा गुरूत्वाकर्षण के बल के कारण नीचे सरक जाती है।

5 . पहाड़ों पर बिस्फोट

पहाड़ों पर सड़क निर्माण के लिए या मैदानी रूप में लाने के लिए वहां पर विस्फोट किये जाते हैं। डाइनामाइट लगाकर विस्फोट किया जाता है जिससे पहाड़ों की चटटानें सरक जाती हैं व वन्य प्राणी मर जाते हैं पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ जाता है।

6. पर्वतों पर इमारतों का बनाना

भू-वैज्ञानिकों द्वारा इंगित भूकम्प प्रभावी क्षेत्र में दिन रात इमारतें खड़ी करने का कार्य जारी रहता है। इमारतें बनाने के लिए पहले पहाड़ों को काटकर मैदान बनाया जाता है फिर नीचे खुदाई होती है जिसके कारण पहाड़ों का रूप बदल जाता है व उसकी जमीन कमजोर पड़ने लगती है।

हमारे यहां के सिविल इन्जीनियर वल्नेटीबिलटी एटलस आफ इण्डिया को दर किनार करते हुए बाँधों की दीवारों को मजबूत करते रहते हैं। जबकि वल्नेटीबिल्टी एटलस आफ इण्डिया, मारत के शहरी विकास मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है तथा जिसकों बनाने वाले डा. आर्या व उनके सहयोगी हैं। उस एटलस में यह साफ साफ दर्शाया गया है कि कौन कौन सा भूकम्प प्रभावी क्षेत्र है तथा कहां इमारत बनाना उचित है और कहां नही ।

प्रकृति का बढ़ता प्रकोप -निवारण

प्रकृति पर बढ़ते प्रकोप के निवारण निम्न प्रकार है :

- हमारे भू - वैज्ञानिकों व अध्ययनरत विद्धानों को चाहिये कि पहाड़ों पर होने वाली वर्षा को मापकर एक ऐसी प्रक्रिया तैयार करें ताकि वर्षा के पानी का जमाव न हो सके व एकत्र पानी को अधिक से अधिक प्रयोग में लाया जा सके । वर्षा जल के इच्छित मार्ग परिवर्तन एवम एस्के उपयोग से जनित समस्याओं को सुलझाने चाहिये । इस मुद्दे में भारत सरकार के अधीन संस्थानों व कार्यालयों को अध्ययन करके एक प्रक्रिया तैयार करनी चाहिए ताकि बाढ़ जैसी भंयकर स्थिति का डटकर मुकाबला किया जा सके ।
- वृक्षों के कटान को तुरन्त रोकना चाहिए वन विभाग को इसमें लिप्त लोगों को पकड़नला चाहिए ताकि वृक्षों के कटान से रोका जाये । वृक्ष भूमि की शक्ति बढ़ाते है व वृक्षों से पर्यावरण का सन्तुलन बना रहता है समय से वर्षा होती है तथा वनस्पति इत्यादि भी मिलती रहती है ।
- पहाड़ों पर सड़कों के निर्माण को रोकना चाहिए ताकि वहां से निकलने वाला मलवा खाईयों में न डाला सके व पानी के बहाव को न रोक सके । सड़कों के निर्माण से पहाड़ों को मैदान के रूप में बदलने से रोकना चाहिए ।
- पहाड़ों पर करने वाले विस्फोटों को रोकना चाहिए ताकि चट्टानों के खिसकने का डर कम हो सके बाँध बनाने का कार्य वल्नेटीबिल्टी एटलस आफ इण्डिया के आधार पर होना चाहिए ।
- पर्वतों पर इमारतों के निर्माण को तुरन्त रोकना चाहिए ताकि भूमि की शक्ति कमजोर न हो सके ।

उपसंहार

उपरोक्त बिन्दुओं पर प्रकाश डालने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मानव समाज को प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए । पर्यावरण का विशेष ध्यान रखते हुए पर्वतों पर वृक्षों का कटान, इमारतों का बनाना रोकना चाहिए। यदि यह नहीं रोका गया तो इसी प्रकार प्राकृतिक आपदाओं का जन्म होता रहेगा और भूस्खलन, भूकम्प आदि जैसी आपदाओं के साथ गुजरना पड़ेगा व जान व माल दोनों की हानि होगी। समाज में लोगों को शिक्षा देकर हमें समझना चाहिए कि प्रकृति हमें पालती है व प्रकृति से ऊपर कुछ नहीं हैं ।

****